History

Lecture No - 26

सिंधु सभ्यता (धार्मिक जीवन)

BY

Dr. Komal
SNSRKS, college, SAHARSA
History

Scanned with CamScanner

Q. सिंधु घाटी के लोगों की धार्मिक दशा के बारे में अध्ययन प्रस्तुत करें।

उत्तर→ भारतीय भूमि पर धर्म एवं धार्मिक भावनाओं की सर्वप्रथम चिनगारी सैन्धव सभ्यता के काल में विकीर्ण हुई, तथापि वहाँ के निवासियों की धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध इतिहास के पास समुचित जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसका सर्वप्रमुख कारण यह है कि यहाँ की लिपि अभी तक अपाठ्य है। सम्भवतः अपने समकालीन सभ्यताओं के लोगों की भाँति सैन्धव प्रदेश के लोग भी बहुदेववादी, प्रकृति पूजक अथवा शक्ति के उपासक थे। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर हम सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों के धार्मिक विश्वासों का अध्ययन

निम्नरूपेण कर सकते हैं।

• **मातृदेवी की प्रधानता :-** सिन्धु घाटी का समाज मातृसत्तात्मक था। अतः समाज में मातृदेवी की पूजा बड़े ही श्रद्धा-भक्ति से की जाती थी। ये लोग पृथ्वी और प्रकृति को मातृदेवी मान कर लोग पूजा किया करते थे। मातृदेवी को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि भी देते थे। मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त सभी देवी की मूर्ति के सिर के ऊपर एक पक्षी अपना पंख फैलाकर इस तरह बैठा है जैसे कि वह मातृ देवी की रक्षा कर रहा हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता में विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में मातृदेवी की पूजा प्रचलित थी।

• **प्रकृति देवी की पूजा :-** प्राचीन विश्व सभ्यता के लोग प्रकृति प्रदत्त उन सभ

वस्तुओं की आराधना करते थे जिनसे उन्हें किसी-न-किसी रूप में लाभ पहुँचता हो। वे वृक्ष, पशु, पक्षी, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि प्राकृतिक शक्तियों की उपासना किया करते थे। वे जल, वायु, अग्नि, नक्षत्र आदि की पूजा किया करते थे। वृक्ष-पूजा की भाँति सिंधु सभ्यता में पशु-पूजा का भी प्रचलन था। यहाँ के लोग विभिन्न पशुओं में देवी-देवताओं का वास मान कर उनकी पूजा अर्चना किया करते थे। यहाँ के लोग प्रेतक एवं राक्षसों के भी उपासक थे।

शिव की पूजा :- सिन्धु घाटी की खुदाइयों में पाये गये तीन मुख वाले मूर्तियों के आधार पर ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में शिव की पूजा का प्रचलन था। शिव को पशुपति

भी देखा जाता है, अतः शिवपूजा का सम्बन्ध पशुओं की पूजा से भी जोड़ा जाता है। शिव की पूजा की शुरुआत सिंधु सभ्यता की ही देन है।

लिंग और योनि की पूजा :- प्रायः आज के युग में शिव की मूर्ति की पूजा न कर लोग उनके लिंग एवं योनि की ही पूजा करते हैं। लिंग एवं योनि की पूजा का प्रचलन भी सिन्धु क्षेत्र में ही शुरू हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लिंग की भाँति योनि पूजा में भी विश्वास रखते हैं। भूत-प्रेत से छुटकारा पाने के लिए भी लोग योनि की पूजा करते थे।

धार्मिक अन्धविश्वास :- सिन्धु घाटी के लोग कई अन्धविश्वास के भी शिकार हो चुके थे। लोगों को भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना आदि में गहरी आस्था थी और इससे बचने के लिए वे तावीज

एवं जन्त्र आदि का प्रयोग भी करते थे। खुदाइयों से प्राप्त सार्वजनिक स्नानागार हम्माम एवं स्वास्तिका के चिन्ह को भी उनके अवसरों पर स्नानकुंड में से धार्मिक महत्व का प्रतीक समझा जाता है। यहाँ के लोग यज्ञ, कर्मकाण्ड एवं पुनर्जन्म के सिद्धांतो में विश्वास रखते थे।

मृतक संस्कार :- सिन्धव घाटी में मृतक संस्कार के नियम सर्वत्र एक जैसे नहीं थे सम्भवत: वहाँ मनुष्य के अंतिम संस्कार के संबंध में तीन प्रथाएँ प्रचलित थी। प्रथम संस्कार के अंतर्गत मनुष्य की लाश को कब्र में दफना दिया जाता था दूसरी प्रथा के अनुरूप पहले से लाश को पशु - पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता था और तत्पश्चात उसके अस्थि पंजर को दफना दिया जाता था। और पात्र अस्थि एवं भस्म को कलश में

करने पर उसे जल प्रवाह कर दिया जाता था। इस तरह यहाँ के लोग जीववाद एवं आत्मा के अमरत्व के सिद्धांत को स्वीकार करते थे।

निष्कर्ष :- सिंधु घाटी की सभ्यता के निवासियों के धर्म एवं उनकी धार्मिक विश्वासों के उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक हिन्दू धर्म की कतिपय विशेषताएँ तत्कालीन धर्म धर्म के बीज रूप में विद्यमान थी। सिन्धु घाटी का धर्म इतनी विशेषता के साथ भारतीय है कि आधुनिक प्रचलित हिन्दू धर्म से उसका विभेद कठिनता से किया जा सकता है। वास्तव में सैन्धव सभ्यता के लोगों का धार्मिक जीवन बहुदेववाद, बाह्याडम्बर एवं पुनर्जन्म के सिद्धांतों से पूर्णतः प्रभावित परिलक्षित होता है और इसका स्पष्ट प्रभाव आधुनिक भारतीय धर्म धर्म पर देखा जा सकता है।